श्री गणेशपञ्चरत्नम् - मुदाकरात्तमोदकं in Hindi

मुदाकरात्तमोदकं एक प्रसिद्ध संस्कृत स्तोत्र है जिसे आदि शंकराचार्य ने लिखा है। यह भगवान गणेश की स्तुति में लिखा गया है। यहां प्रत्येक श्लोक का हिंदी अनुवाद और व्याख्या दी गई है:

श्लोक **1**:

मुदाकरात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥१॥

अनुवाद: जो हाथ में मोदक लिए हुए हैं, सदा मुक्ति का साधन हैं, जिनके मस्तक पर चंद्रमा सुशोभित है और जो समस्त लोकों की रक्षा करते हैं। जो अनायकों के एकमात्र नायक हैं, जो गजासुर जैसे दैत्यों का विनाश करते हैं और जो अपने भक्तों के समस्त अशुभों को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं, ऐसे विनायक (गणेश) को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक **2**:

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥२॥

अनुवाद: जो दुर्जनों को अत्यंत भयंकर प्रतीत होते हैं, जो नवोदित सूर्य के समान तेजस्वी हैं, जो देवताओं के शत्रुओं का नाश करते हैं, जो नतमस्तक भक्तों की विपत्तियों को हर लेते हैं। जो देवताओं के ईश्वर, निधियों के स्वामी, गजों के अधिपति और गणों के स्वामी हैं, ऐसे परात्पर (सर्वोच्च) महेश्वर गणेश की मैं निरंतर शरण लेता हूँ।

श्लोक **3**:

समस्तलोकशंकरं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥३॥

अनुवाद: जो समस्त लोकों के कल्याणकारी हैं, जिन्होंने दैत्यकुञ्जर (गजासुर) का नाश किया, जिनका उदर विशाल है, जो वरदान देने वाले हैं, जिनका मुख हाथी के समान है और जो अक्षर (अनंत) हैं। जो कृपा और क्षमा के सागर हैं, जो आनंद और यश देने वाले हैं, जो भक्तों के मन को प्रसन्न करते हैं, ऐसे तेजस्वी गणेश को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक **4:**

अकिंचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनंजयादिभूषणम्
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ॥४॥

अनुवाद: जो निर्धनों के दुःखों का हरण करते हैं, जो प्राचीन संतों द्वारा प्रशंसित हैं, जो शिव (पुरारि) के प्रिय पुत्र हैं और जो देवताओं के शत्रुओं के गर्व का नाश करते हैं। जो संसार के नाश के समय भयानक रूप धारण करते हैं, जो अर्जुन आदि के भूषण हैं, जिनकी कपोलों (गालों) की शोभा अपरंपार है, ऐसे प्राचीन हाथी स्वरूप गणेश की मैं भक्ति करता हूँ।

श्लोक **5:**

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजं
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम् ॥५॥

अनुवाद: जो अत्यंत सुंदर दंत (दाँत) वाले हैं, जो यमराज (मृत्यु के देवता) के भी विनाशक शिव के पुत्र हैं, जिनका रूप अचिंत्य (अकल्पनीय) है, जो अनंत हैं और जो विघ्नों का नाश करते हैं। जो योगियों के हृदय में निरंतर वास करते हैं, ऐसे एकदंत गणेश को मैं सदा चिंतन करता हूँ।

श्लोक **6:**

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ॥६॥

अनुवाद: जो व्यक्ति महागणेश के इन पाँच रत्नों (श्लोकों) का प्रति दिन प्रातःकाल श्रद्धापूर्वक जाप करता है, हृदय में गणेश का स्मरण करते हुए, वह शीघ्र ही रोगों और दोषों से मुक्त हो जाता है, उसे उत्तम संतति प्राप्त होती है, वह दीर्घायु, संपन्न और अष्टभूतियों से युक्त हो जाता है।

यह स्तोत्र भगवान गणेश की महानता और दिव्यता का वर्णन करता है। इसके नियमित पाठ से भक्तों को समस्त विघ्नों से मुक्ति मिलती है और वे सुख, समृद्धि और शांति प्राप्त करते हैं।

Shri Ganesha Pancharatnam - Mudakaratta in English

mudākarātta mōdakaṁ sadā vimuktisādhakaṁ
kalādharāvataṁsakaṁ vilāsilōkarakṣakam |
anāyakaikanāyakaṁ vināśitēbhadaityakaṁ
natāśubhāśunāśakaṁ namāmi taṁ vināyakam || 1 ||

natētarātibhīkaraṁ navōditārkabhāsvaraṁ
namatsurārinirjaraṁ natādhikāpaduddharam |
surēśvaraṁ nidhīśvaraṁ gajēśvaraṁ gaṇēśvaraṁ
mahēśvaraṁ tamāśrayē parātparaṁ nirantaram || 2 ||

samastalōkaśaṅkaraṁ nirastadaityakuñjaraṁ
darētarōdaraṁ varaṁ varēbhavaktramakṣaram |
kṛpākaraṁ kṣamākaraṁ mudākaraṁ yaśaskaraṁ
manaskaraṁ namaskṛtāṁ namaskarōmi bhāsvaram || 3 ||

akiñcanārtimārjanaṁ cirantanōktibhājanaṁ
purāripūrvanandanaṁ surārigarvacarvaṇam |
prapañcanāśabhīṣaṇaṁ dhanañjayādibhūṣaṇaṁ
kapōladānavāraṇaṁ bhajē purāṇavāraṇam || 4 ||

nitāntakāntadantakāntimantakāntakātmajaṁ
acintyarūpamantahīnamantarāyakṛntanam |
hṛdantarē nirantaraṁ vasantamēva yōgināṁ
tamēkadantamēva taṁ vicintayāmi santatam || 5 ||

mahāgaṇēśa pañcaratna mādarēṇa yō:’nvahaṁ
prajalpati prabhātakē hṛdi smaraṅgaṇēśvaram |
arōgatāmadōṣatāṁ susāhitīṁ suputratāṁ
samāhitāyuraṣṭabhūtimabhyupaiti sō:’cirāt || 6 ||